हिंदी बाल कविताओं में पर्यावरण चेतना

Key Words: *पर्यावरण चेतना, हिन्दी बाल साहित्य, बालमनोविज्ञान, औद्योगीकरण और बाजारीकरण।*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

A Refereed Research Journal And a complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

शोध संचयन

बाल साहित्य के विराट संसार में ऐसी अनेक कविताएँ, कहानियाँ एवं उपन्यास हैं जो पर्यावरण का स्वरूप स्पष्ट करने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण की चेतना भी जाग्रत करती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य, पर्यावरण के प्रति चिंतनशील बनाने वाली बालकविताओं के माध्यम से, अभिभावकों का ध्यान बालोपयोगी साहित्य की ओर आकृष्ट करना है। ताकि वे अपने पाल्यों को ही नहीं, अन्य बच्चों को भी बालमन के अनुरूप पुस्तकें भेंट करके, अध्ययन के प्रति उनकी अभिरुचि जाग्रत कर सकें। यदि बाल्यकाल से ही बच्चों को बालमनोनुरूप साहित्य पढ़कर सुनाया जाए अथवा पढ़ने को दिया जाए तो भविष्य में उन्हें उन सामाजिक तथा पर्यावरणिक समस्याओं से नहीं जूझना पड़ेगा, जिनसे हम और हमारा समाज आज, जूझ रहा है।

डॉ० प्रभा पंत
एसो०प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग
एम०बी०रा०स्ना०महा०वि०, हल्द्वानी

बालसाहित्य वह साहित्य है जो बच्चो का मनोरंजन करने के साथ ही बालमन उपवन में संस्कारों के बीजों को आरोपित करके, उन्हें अंकुरित होने के लिये अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। बालमन अत्यंत सरल एवं संवेदनशील होता है, कहानी और कविता सुनकर सहज ही उस पर विश्वास कर लेता है। अतः बालसाहित्यकारों तथा माता-पिता का दायित्त्व है कि वे बच्चों को ऐसा साहित्य उपलब्ध कराएँ जो उन्हें अपने परिवेश एवं पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बना सके तथा भावी जीवन के प्रति सजग करने में सहायक हो सके। हमारे चारों ओर आच्छादित प्राकृतिक आवरण ही पर्यावरण कहलाता है। अर्थात् इस सृष्टि में हवा, पानी, मिट्टी, मरुस्थल, नदी, वन, पर्वत, अंतरिक्ष, समुद्र आदि जो भी है; इन सबसे मिलकर ही पर्यावरण निर्मित होता है। मनुष्य की ही नहीं प्राणीमात्र के जीवन की प्रत्येक घटना भी इसी के भीतर संपादित होती है। धरती, आकाश, अग्नि, जल और वायु, ये सृष्टिजगत के पाँच मूलाधार तत्त्व हैं। इन पंचतत्त्वों के समुचित संयोग से ही सम्पूर्ण चराचर जगत गतिमान है। प्रत्येक जीवधारी पर्यावरण का एक अभिन्न अंग है। पर्यावरण के किसी एक अंग को क्षति पहुँचाने का अर्थ है, संपूर्ण पर्यावरण को असंतुलित करना। एक ओर जहाँ पर्यावरण मानवजीवन को प्रभावित करता है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य के समस्त क्रिया-कलापों से पर्यावरण प्रभावित होता है। इस प्रकार एक जीवधारी तथा उसके पर्यावरण के मध्य अन्योन्याश्रित संबंध होता है। 'हमारे ऋषि-मुनियों ने इस रहस्य को बहुत पहले समझ लिया था। इसी कारण उन्होंने अग्नि, जल,वायु,मृदा और आकाशीय तत्त्वों को शुद्ध रखने का हर संभव संदेश दिया है। बल्कि उन्होंने जो धर्म की व्याख्या की वह इस तरह थी, 'धर्म वही है जो प्रकृति के अनुकूल चलने का मार्ग बताए।'[1]

पर्यावरण की चेतना का बीजारोपण वस्तुतः बाल्याकरण से उपयुक्त होता है। बाल कविताएँ इसका श्रेष्ठ पथ प्रदर्शन कर सकती हैं। इस दृष्टि से बाल्यसाहित्यकारों का पर्यवेक्षण समीचीन होगा। प्रसिद्ध वयोवृद्ध साहित्यकार राजा चौरसिया अपनी कविता 'पर्यावरण बचाना होगा' में निरन्तर बढ़ रहे पर्यावरण प्रदूषण को लेकर अत्यधिक चिन्तित हैं। वयस्कों की स्वार्थपरता एवं अज्ञानता का ही दुष्परिणाम कि आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या इतनी अधिक बढ़ गई है। तभी तो कवि बच्चों को पर्यावरण के बिगड़ते स्वरूप को बचाने का संदेश देता दिखाई दे रहा हैं- 'आज प्रदूषण बढ़ता जाता/पर्यावरण बिगड़ता जाता/दुष्परिणामों का पारा अब तो/ कितना ऊपर चढ़ता जाता।'[2]

एक नया परिवर्तन लाएँ/ निर्मल पर्यावरण बनाएँ/ शुद्ध करें नदियों-नालों को/ मिलने दें न उनमें ज़हर/ गाँवों, नगरों,

कारखानों से/ निकले हैं कई गटर।'[3]
अपने लघु आकार के कारण दोहा याद करना आसान होता है; अत: अनेक कवियों ने दोहा छंद के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है। कम शब्दों में अधिक बात कहकर कवि बच्चों को वृक्षारोपण के लिये प्रेरित करता हुआ कहता है- 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ/ जीवन को खुशहाल बनाओ/ पेड़ बड़े है औघड़ दानी, देते जग को जीवन पानी।'[4]

औद्योगीकरण और बाजारीकरण के इस युग में निरन्तर उग रहे कंकरीट के जंगलों ने पर्यावरण को अत्यधिक क्षति पहुँचाई है। उद्योग स्थापित करने तथा बहुमंजिली ईमारतें बनाने के लिए निरन्तर पेड़ों का कटान हो रहा है। व्यापार के लिए तस्कर भी पेड़ों को अवैध रूप से काट रहे हैं। अगर इसी तरह वृक्षों का कटान होता रहा तो एक समय ऐसा आयेगा जब हमें जीवित रहने के लिये ऑक्सीजन सिलेंडर की आवश्यकता पड़ने लगेगी; क्योंकि तब प्राणवायु के लिये धरती पर वृक्ष शेष ही नहीं बचेंगे। तभी तो वयोवृद्ध साहित्यकार राजा चौरसिया बच्चो से कहते हैं-'चलो एक अभियान चलाएँ/ पेड़ अधिक से अधिक लगाएँ/ इनसे जनम-जनम का नाता/ छाया-प्राणवायु के दाता/ समझे औरो को समझाएँ।'[5]

विश्व की बढ़ती औद्योगिक क्रांति के कारण आज पर्यावरण प्रदूषण का संकट, मानव सभ्यता के समक्ष इस सदी की सबसे बड़ी चुनौती बनकर उपस्थित है। पर्यावरण समस्याएँ अधिकांशत: पर्यावरण में होने वाले वे सारे अवांछनीय परिवर्तन जैसे, जनसंख्या में हो रही उत्तरोत्तर वृद्धि, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण तथा अन्य प्राकृतिक आपदाएँ, मानव द्वारा संसाधनों के अतिदोहन से जुड़ी हैं। वृक्ष हर प्रकार के प्रदूषण के शोषक तथा प्राणवायु के शोधक हैं, हम सभी यह बात भली-भाँति जानते हैं। कवि बच्चों को भी इस सत्य से परिचित कराना चाहता है-'इस धरती पर/ सोचो किंचित/ पेड़ नहीं यदि होते/ नहीं ओषजनहोती भूपर/ प्राण तत्व का मूल/ जड़ होती यह सारी दुनिया/ पत्थर केवल मूक/ नहीं कुतरते फलफुनगी पर/ बैठे मज़े से तोते/ नहीं सुनाई देती प्यारी/ कोयल जी की कूक।'[6]

पहाड़ों में भूस्खलन की समस्या बढ़ती जा रही है। अत्यल्प वर्षा से भी अब बड़े-बड़े पहाड़ खिसकने लगे हैं; इस भूस्खलन का मूल कारण है पेड़ों का कटान। पेड़ अपने जड़ों से मिट्टी को जकड़े रहते हैं तथा पानी को भी सोख लेते हैं, किन्तु जब पेड़ काट दिये जाते हैं तो पानी बिना अवरुद्ध हुए तीव्रगति से प्रवाहित होता है और अपने साथ पहाड़ों को भी ढहाता चला जाता है। पानी का यह तीव्र बहाव मैदान में जाकर बाढ़ का रुप ले लेता है-'झेल रहा बर्फीली आँधी/ इधर न आने देता/ कष्ट सभी अपने ऊपर ही/ बिना कहे ले लेता/ किन्तु नहीं हम जीने देने/ इसको जीवन इसका/ धीरे-धीरे अंग भंग कर/ कुतर-कुतर तन इसका/ क़सम एक सब मिलकर खाएँ/ हरा-भरा हम इसे बनाएँ/ लेता नहीं सभी कुछ देता/ स्वर्णिम इसका रूप सजाएँ।'[7]

वर्तमान में पर्यावरण का जो विनाशकारी रूप दिखाई दे रहा है वह मनुष्य के दुष्कर्मो का ही फल है। अगर इसी तरह मानव द्वारा पर्यावरण को क्षति पहुँचायी गयी तो निश्चय ही यही जीवनदायी पर्यावरण मानव के लिए विनाशकारी बन जाएगा। इसीलिये-'आज समय की माँग यही है/ पर्यावरण बचाओ/ तब तक जीव-जगत है जग में/ जब तक जग में पानी/ जब तक वायु शुद्ध रहती है/ सोंधी मिट्टी रानी/ तब तक मानव का जीवन है/ सबको यह समझाओ।'[8]

बच्चे बड़ों को जैसा करते देखते हैं, स्वयं भी वैसा ही करने लगते हैं। तभी तो वे भरी बाल्टी का पानी बेवजह उड़ेल देते हैं; पानी से खेलते हैं, अपने मनोरंजन के लिये उसे एक-दूसरे पर फेंकते हैं; क्योंकि वे पानी के महत्त्व को नहीं समझते। 'पानी की कीमत' नामक कविता में कवि ने कथात्मक शैली में पानी का महत्व समझाया है- 'चिंटू भइया रोज नहाते/ बाथरूम के अंदर/ उछल-कूदकर खूब नहाते/ लगते नटखट बंदर.../ एक दिवस पूरी टंकी का/ खत्म हुआ जब पानी/ बिजली भागी हुआ अंधेरा/ याद आई नानी.../ समझ आयी पानी की कीमत/ आई भूलें याद/ ग़लती पर अपनी पछताए/ खूब करीफरियाद/ उसको यह माँ ने समझाया/ जल अमृत होता है/ समझबूझकर खर्च करें तो/ पड़ता कब टोटा है।'[9]

इस प्रकार हिन्दी बाल साहित्य में पर्यावरण चेतना व पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखकर अनेक कविताएँ लिखीं गयी है जो न केवल पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सचेत कर रही हैं बल्कि पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरित भी कर रहीं हैं- 'बच्चे जग के प्यारे-प्यारे/ घर-आँगन में पौधे रोपें/ हम सब ही हैं देश के/ धरती को कुछ पौधे सौंपें/ ...पौधे जग में ज्यादा होंगे/ हरियाली-खुशहाली होगी/ रोग मिटेंगे, शोक मिटेंगे/ रोज नई दिवाली होगी।'[10]

'पस्त प्रदूषण से यह धरती/ऊसर-बंजर-सूखी परती/कहाँ गई इसकी हरियाली/जन-जन की जो पीड़ा हरती/हरियाली सरसाना होगा/पर्यावरण बचाना होगा।'[11]

'वृक्षो का संवाद' के माध्यम से कवि ने बच्चों की सुषुप्त संवेदना को जाग्रत करने का प्रयास किया है। कविता में वृक्षों का परस्पर संवाद सुनकर बच्चे सचेत हों; उनकी पीड़ा को समझें और वृक्षों को बचाने भाव उनके हृदय में जाग्रत हो- 'दुखी बहुत हूँ मित्र मैं, क्या बतलाऊँ बात/ आये दिन करने लगा, अब मानव उत्पात/ विपदा बड़ी भारी है, चलती नित्य आरी है/ तब बोला, तरु दूसरा सुन मेरे मनमीत/स्वार्थ में डूबा मनुष्य, नहीं किसी से प्रीत/ यदि नहीं वह समझेगा/ फल वही सब भोगेगा।'[12]

बाल्यकाल से ही साहित्य के माध्यम से बच्चों को पर्यावरण की जानकारी दी जानी चाहिये। प्रकृति प्रदत्त विविध उपहारों की उपयोगिता तथा हमारे जीवन में जल, वायु, वृक्षादि के महत्त्व को बताते हुए जब हम उन्हें इन सबके संरक्षण के लिये अभिप्रेरित करेंगे तो निश्चय ही वे अपने पर्यावरण के प्रति सजग

एवं सचेत रहेंगे। कहानी, नाटक, निबंध, गीत, कविता, आदि के माध्यम से यह कार्य सहज ही किया जा सकता है- 'सारे जग के शुभचिंतक/ ये पेड़ बड़े उपकारी/ सदा-सदा सेवसुधा इनकी/ ऋणी और आभारी/ फल देते ईंधन देते हैं/ देते औषधि न्यारी/ छाया देते औ' देते हैं सरस हवा सुखकारी/ परहित जीने मरने का आदर्श हमें सिखलाएँ/ ऑक्सीजन का मधुर ख़ज़ाना/ भर-भर हमें लुटाएँ।'[13]

साहित्य सदैव ही समाज को प्रतिबिम्बित करता रहा है। साहित्य न केवल समाज की तात्कालिक समस्याओं तथा सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक परिस्थितियों को चित्रित करता है, बल्कि समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करता है। इतना ही नहीं वह मनुष्य को भविष्य में आने वाली समस्याओं के प्रति सजग करके, उसे उचित दिशा भी प्रदान करता है- 'आज समय की माँग यही है/ पर्यावरण बचाओ/ तब तक जीव-जगत है जग में/ जब तक जग में पानी/ जब तक वायु शुद्ध रहती है/ सौंधी मिट्टी रानी/ तब तक मानव का जीवन है/ सबको यह समझाओ।'[14]

आज बच्चों को अपने माता-पिता प्रतिक्षण भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये चिंतित तथा भागते-दौड़ते दिखाई दे रहे हैं। अपनी इस व्यस्तता के कारण उनके पास इतना समय भी नहीं होता कि वे अपने बच्चो के मनोभावों को या उनकी भावात्मक आवश्यकताओं को समझने का प्रयास भी कर सकें। सुबह से शाम तक भागदौड़ करते-करते माता-पिता इतने थक जाते हैं कि न तो वह कभी अपने बच्चो से मानवीय मूल्यों या जीवनमूल्यों पर चर्चा करते हैं; न प्रकृति, पर्यावरण, समाज आदि के प्रति उन्हें जानकारी देना ज़रूरी समझते हैं। इस कारण भी इन विषयों में बच्चों की कोई अभिरुचि होती है। वे अपने आस-पड़ोस या स्कूल में अपने हमउम्र बच्चो को; अपने सहपाठियों को जो कुछ करते-कहते हुए देखते-सुनते हैं, अपने लिये उसे ही ज़रूरी समझते हैं। ऐसी स्थिति में साहित्य एकमात्र ऐसा साधन है, जो मनोरंजन के साथ ही बच्चों के मन की उलझनों को सुलझाकर उनका उचित मार्गदर्शन कर सकता है; पढ़ने-लिखने तथा परिश्रम करने के लिये प्रेरित कर सकता है तथा पर्यावरण के प्रति उन्हें सहज ही जागरूक करने की सामर्थ्य भी रखता है- "गाड़ीपुरा जैसा ही बच्चों/ था एक प्यारा गाँव/ स्वच्छ-निर्मल नदी किनारे पीपल की थी छाँव/ हरे-भरे थे वृक्ष वहाँ, हरीपुरा था नाम/ रहते थे उस गाँव में भी तुम जैसे ही प्यारे बच्चे/ कुछ नटखट-शरारती, कुछ झूठे, कुछ सच्चे।"

इसी प्रकार एक दूसरी कविता है- "वैसे तो वे प्यारे थे, माँ की आँखों के तारे थे/ किन्तु, शिक्षा के अभाव में, मन उनके अँधियारे थे/ इसलिये,पशुओं-सा था जीवन उनका/ काम के नाम पे/ न तोड़े तिनका/ खाना-सोना काम था जिनका/ लक्ष्यरहित जीवन था उनका।" जैसे जानवर/ खाते-पीते मौज मनाते/ हरे-भरे खेत चर आते/ जब जी चाहे सो जाते/ चाहे जहाँ गोबर कर आते।/ जानते हो फिर क्या हुआ?

हरे-भरे हरिपुरा का परिदृश्य सारा बदल गया/ हरियाली के स्थान पर कंकरीट-वन उग गया/ लोगों की अज्ञानता से जल भी प्रदूषित हो गया/ प्रदूषित पानी पीने से, अस्वस्थ सब रहने लगे/ धीरे-धीरे उस गाँव के, पेड़ बच्चों कटने लगे/ भूमि बंजर हो गई, लोग भी भूखों मरने लगे/ उनके आलस के कारण खेत सारे बिकने लगे/ ज्ञान के अभाव में घर भी सबके उजड़ने लगे/ इसलिये, सुनो-सुनो ओ! प्यारे बच्चो, आलस कभी न तुम करना/ माता-पिता का हाथ बँटाना, पढ़ना-लिखना खेती करना/ पढ़-लिखकर सबको पढ़ाना, गाँव का नाम रोशन करना।'[15]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि बाल-कविताओं के माध्यम से बच्चों को प्रकृति एवं पर्यावरण की जानकारी देकर, उन्हें अपने परिवेश एवं पर्यावरण के प्रति सहज ही जागरूक किया जा सकता है। जब बच्चे स्वच्छ और निर्मल पर्यावरण का अर्थ एवं महत्त्व समझने लगेंगे तथा प्रकृति को अपना मित्र एवं सहयोगी मानने लगेंगे तो स्वत: ही अपने पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना चाहेंगे। नि:संदेह इससे भविष्य में उन्हें पर्यावरण प्रदूषण तथा उसके क्षरण की समस्याओं से जूझना नहीं पड़ेगा तथा वे बिना किसी दबाव के समाज के प्रति अपने दायित्त्वों का निर्वहन करते हुए अपना जीवन व्यतीत करेंगे और भावी पीढ़ी को सुरक्षित पर्यावरण सौंपकर जाएँगे।

संदर्भ:-

1. गर्ग, भैरूँलाल, बालवाटिका, संपादकीय- अंक जून 2010, भीलवाड़ा राज0, पृ0सं0 2
2. चौरसिया, राजा, अपने हाथ सफलता है- बालवाटिका प्रकाशन, भीलवाड़ा 2009, पृष्ठ 28
3. शर्मा, जगदीश चन्द्र, निर्मल पर्यावरण बनाएँ, बालवाटिका, जून 2014
4. मिलकर साथ चलें- डॉ0 रामनिवास मानव वर्ष 2012
5. चौरसिया राजा,अपने हाथ सफलता है- बालवाटिका प्रकाशन, भीलवाड़, 2009, पृष्ठ 09
6. पंत रमेशचन्द्र, 101 बाल कविताएँ, उत्कर्ष प्रकाशन विद्यापुर, द्वाराहाट,अल्मोड़ा, 2006
7. सक्सेना राजकिशोर, ममता बाल गंगा, ममता प्रकाशन, हनुमान मंदिर, खटीमा, 2012, पृ0सं0-19
8. शुक्ल परशुराम, सुख पाना है, प्रकाशक विज्ञान भारती-बी-सूर्यनगर, गाज़ियाबाद, पृ0सं0-49-50
9. चक्रधर अशोक, मीठी कर लें अपनी बोली, प्रकाशक एक्सप्रेस बुक, कश्मीरी गेट दिल्ली, 2011, पृ0सं0- 24-25
10. चक्रधर अशोक, मीठी कर लें अपनी बोली, प्रकाशक एक्सप्रेस बुक, कश्मीरी गेट दिल्ली, 2011, पृ0सं0- 27
11. भाटी, योगेन्द्र, प्र्यावरण बचाना होगा, बालवाटिका, अंक 220, राजस्थान, पृ0सं0-43
12. मानव रामनिवास, मिलकर साथ चलें- वर्ष 2012
13. शुक्ल परशुराम, मंगलग्रह जाएँगे, प्रकाशक विज्ञान भारती-बी-सूर्यनगर, गाज़ियाबाद, 2008, पृ0सं0-78
14. पांडे नागेश, यदि ऐसा हो जाए, लवकुश प्रकाशन, ऐक्टर-ए, महानगर लखनऊ, 2011, पृ0सं0-50
15. पंत प्रभा, बालगीत एवं कविताएँ (प्रकाशनाधीन